चन्द्रगुप्त नाटक

'में त्रार्थ वीर हूँ, है मुभे—

मरने की परवाह क्या ?

जब कृद पड़ा रर्णभृमि में,

तब जीने की चाह क्या ?'

(श्रंक ४.)

बदरीनाथ भट्ट बी॰ ए॰